महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात

शोध प्रबंध का संक्षिप्त विवरण

पीएच.डी. (हिन्दी)

सत्यं शिवं सुन्दरम्

"आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन"

अनुसंधित्सु

जगदीश मौर्य

शोध निर्देशक

डॉ. अनीता शुक्ल

सहायक आचार्य

हिन्दी विभाग

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात

हिन्दी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, गुजरात

2024-25

विषय सूची

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूमिका	HV
प्रथम अध्याय	आचार्य चतुरसेन शास्त्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	01 - 71
द्वितीय अध्याय	आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन	72 - 186
तृतीय अध्याय	आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों की प्रासंगिकता	187 - 204
चतुर्थ अध्याय	आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के पुरुष पात्र	205 - 336
पंचम अध्याय	आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के स्त्री पात्र	337 - 409
षष्ठ अध्याय	आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का शिल्प सौष्ठव	410 - 434
.....	उपसंहार	435 - 447

.....	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	448 - 459

शोध प्रबंध का संक्षिप्त विवरण/ EXECUTIVE SUMMARY

उत्तर प्रदेश की धरती में जन्म लेने एवं शिक्षा के कारण वहां की संस्कृति से मेरा लगाव एवं आकर्षण होना स्वाभाविक था। बचपन से ही मुझे कहानियां पढ़ने का शौक था। धीरे-धीरे बढ़ती इस उम्र के साथ-साथ मेरी कहानियों के प्रति रुचि भी बढ़ती गयी।मेरी इस रुचि ने ही मुझे अध्ययन के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। लिहाजा मैं अपने अध्ययन के दौरान ही प्रतिष्ठित लेखकों की कहानियां पढ़ने लगा। मैंने आचार्य चतुरसेन शास्त्री की भी कहानियां पढ़ी। जैसे- कहानी ख़त्म हो गई, भाई की विदाई, दुखवा मै कासे कहूँ मोरी सजनी, बहिन तुम कहाँ, सोया हुआ शहर, दिया सलाई की डिबिया, मैं तुम्हारी आँखों को नहीं,तुम्हें चाहता हूँ, हैदर अली आदि।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियां बड़े ही मार्मिक ढंग से लिखी गयी हैं, जो ऐतिहासिक, सामाजिक, ग्रामीणपरक आदि प्रकार के जीवन मूल्यों को समझने में सहायता प्रदान करती हैं। जैसे-:अम्बपालिका, बावर्चिन, सोने की पत्नी, ककड़ी की कीमत, राजा की कुतिया, विश्वास पर विश्वास आदि। कहानियों के विषय तथा क्षेत्र समाज की यथार्थता से सीधे जुड़े हुए हैं। कहानियों की उपरोक्त विशेषताओं एवं उपलब्धियों को ध्यान में रख कर ही मैंने 'कहानी' विधा को शोध का विषय चुना| यह विषय अनुसंधान के क्षेत्र में नया व मौलिक है, क्योंकि किसी भी व्यक्ति या

समाज को कोई सन्देश या उपदेश देना हो, तो वह सन्देश यदि किसी कहानी के माध्यम से दिया जाये तो निश्चित ही वह बहुत प्रभावी होगा और समाज के लिए एक नयी दिशा प्रदान करेगा|"आचार्य चतुरसेन शास्त्री के सम्पूर्ण कहानी साहित्य को देखकर उसके शैल्पिक वैभव और कथ्य के बहुआयामी स्वरूप के सम्बन्ध में कोई संदेह नहीं रह जाता| ऐतिहासिक, पौराणिक, राजनैतिक, प्रागैतिहासिक, सामाजिक समस्यात्मक, भावात्मक, व्यंग्यात्मक आदि सभी प्रकार की कहानियां उन्होंने सृजित की है|"

हिन्दी गद्य विधाओं में कहानी सबसे शसक्त विधा बनकर विकसित हुई है| आज कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में अधिक हैं| यही कारण है कि पत्र-पत्रिकाओं में कहानियों की मांग सर्वाधिक है| विगत सौ वर्षों में हिन्दी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साह वर्धक है| अन्य सभी गद्य विधाओं की अपेक्षा आज हिन्दी कहानी में युगबोध की क्षमता सर्वाधिक दिखाई पड़ती है| मानव जीवन की किसी एक अंग या संवेदना अथवा संस्कृति की अभिव्यक्ति कहानी में जितनी सहजता एवं स्पष्टता के साथ होती है, वह अन्य किसी विधा के द्वारा नहीं| यही कारण है कि बाल, युवा एवं बुजुर्ग सभी कहानियों के माध्यम से तरह-तरह का ज्ञान अर्जित करते हैं तथा आनंदित भी होते हैं|

कहानी कला की सार्थकता उसके सामाजिक सन्दर्भों में निहित है| सामाजिक जीवन में व्यक्ति परिवार, गाँव, नगर एवं राष्ट्र विभिन्न इकाइयाँ हैं| इनका परस्पर अटूट सम्बन्ध होता है| आज के युग में कहानियां जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जैसे- ग्रामांचल की कहानियां, नगर परिवेश की कहानियां, भ्रष्टाचार से सम्बंधित कहानियां तथा दहेज़ प्रथा सम्बन्धी कहानियां इत्यादि प्रकाशित हो रही हैं, जो मानव जीवन के हर पहलू को हू-ब-हू प्रस्तुत करती हैं तथा हमारे समाज का सच्चा रूप हमें

दिखलाती हैं|चतुरसेन शास्त्री की कहानियों में भारतीय संस्कृति एवं शोध की विभिन्न पद्धतियां दिखाई पड़ती हैं।

संक्षिप्त अनुसंधान पद्धति -

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शोध की विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। इन पद्धतियों का आवश्यकता अनुरूप प्रयोग करके साहित्य का मूल्यांकन किया गया है। शोध पद्धति एक रणनीतिक ढ़ांचा है, जो शोधकर्ताओं द्वारा डाटा एकत्र करने और विश्लेषण करने के लिए, उपयोग की जाने वाली व्यवस्थित प्रक्रिया को रेखांकित करता है। यह एक रोडमैप के रूप में कार्य करता है, जो जांच कर्ताओं को अनुसरण करने के लिए एक संरचित मार्ग प्रदान करता है, जिससे उनके निष्कर्षों की विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित होती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह वह खाका है, जो हमारे सम्पूर्ण शोध - यात्रा को नियंत्रित करता है। इस शोध प्रबंध में निम्नलिखित पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।

वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति-

वर्णनात्मक शोध का उद्देश्य किसी जनसंख्या, परिस्थिति या घटना का सटीक और व्यवस्थित वर्णन करता है। यह क्या, कहां, कब और किस तरह जैसे प्रश्नों का जवाब दे सकता है लेकिन क्यों जैसे प्रश्नों का नहीं। शोध विशेषज्ञों के अनुसार शिक्षा संबंधित स्थितियां, प्रचलित व्यवहार, विश्वास, दृष्टिकोण जो स्थापित हो चुके हैं, प्रक्रियाएं जो गतिशील हैं, सम्प्रति नई दिशाएं एवं प्रवृत्तियां जो निरंतर विकसित हो रही हैं, का अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति में किया जाता है।

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति

इस प्रकार के शोध के अन्तर्गत अध्ययन के समय जो परिस्थितियां हैं, उनका उसी रूप में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जाता है। इसमें तथ्यों का संकलन महत्वपूर्ण होता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि ये अध्ययन के समय पाई जाने वाली स्थिति की प्रकृति का निर्धारण करती है। विवरणात्मक अनुसंधान का उद्देश्य किसी परिस्थिति में परिस्थितियों अथवा स्थितियों के संदर्भ में क्या पाया जाता है, इसका वर्णन करता है।

विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति -

विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग निष्कर्ष निकालने और निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए जानकारी एकत्रित करने, विश्लेषण करने और व्याख्या करने के लिए किया जाता है। शोध का उद्देश्य एवं अपने पास मौजूद तथ्यों के आधार पर हम विभिन्न तरीकों का प्रयोग करके विश्लेषणात्मक शोध कर सकते हैं।

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग हमेसा से विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में अभिव्यक्तपरक मानवीय चेतना के अध्ययन से होता आया है। ज्ञान एवं अनुभूति के क्षेत्र में सर्वमान्य मान्यताओं को उद्घाटित कर एकता का सामन्जस्य पूर्ण उदाहरण तुलनात्मक शोध द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। तुलनात्मक शोध अनेक विधियों द्वारा किया जा सकता है| जैसे:- काव्य कृतियों की भाषा का तुलनात्मक शोध, भाषानुसंधान संबंधी तुलनात्मक शोध, एक समयावधि की रचनाओं में तुलनात्मक अध्ययन का, फिर समान विषय वस्तु संबंधी रचनाओं में तुलनात्मक अनुसंधान। हिंदी भाषा भारत की संपर्क भाषा है| अतः इसमें तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा विकास और समृद्धि के अवसर और भी प्राप्त हो सकते हैं। वर्तमान

समय में एक से अधिक भाषाओं और लिपियों की जानकारी साहित्यिक उपलब्धि की दिशा में जितनी कारगर है, उतनी ही राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में भी। अतः तुलनात्मक अनुसंधान इस दृष्टि से भी उपयोगी है। अध्ययन की दृष्टिगत मैंने अपने प्रस्तुत शोध प्रबंध को निम्नलिखित विवरण के अनुसार वर्गीकृत करके पूर्ण किया है, जिससे विषय का प्रतिपादन भली प्रकार संभव और सम्यक रूपेण हो सके।

शोध प्रबंध का विवरण

हिंदी साहित्य के महान शिल्पी कथाकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने अपनी सुप्रसिद्ध रचनाओं के द्वारा जन-जन को जागृत किया एवं समाज में फैली कुरीतियों एवं अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया। आज भी उनकी कहानियों और उपन्यासों को पाठक बड़े ही आदर तथा लगन के साथ पढ़ते हैं और उनमें वर्णित आदर्शों, नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक तत्वों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। भारतीय संस्कृति का हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। मनुष्य को जीवन यापन करने के लिए भौतिक और मानसिक दोनों प्रकार की परिस्थितियां आवश्यक हैं। हम केवल भौतिक परिस्थितियों को परिमार्जित करके अपने इस शरीर को ही संतुष्ट कर सकते हैं, आत्मा की तृप्ति के लिए हमें भोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती, क्योंकि भोजन तो केवल शरीर की भूख मिटाता है। आत्मा की संतुष्टि के लिये एक मनुष्य जो विकास और उन्नति करता है, उसी को हम संस्कृति कह सकते हैं।

जैसा कि आम जन मानस में यह प्रचलित है कि व्यक्ति अपने जीवन में जो भी कुछ करता है, उसे यदि पूरी मेहनत, श्रद्धा, लगन, ईमानदारी और धैर्यपूर्वक करता है तो वह सफल अवश्य होता है। इसी तरह एक गुरुकुल का पढ़ा हुआ छात्र, अभावों और परेशानियों की जिदंगी में जिया छात्र, जब उसने

अपनी लेखनी उठाई तो केवल इतिहास के ही सुनहरे पन्नों को नहीं, अपितु साहित्य के हर पटल पर अपनी मेहनत और लगन के बल पर एक अमिट छाप छोड़कर चला गया। ऐसा ही एक अत्यंत संघर्षशील, प्रयत्नशील, कर्मठ एवं महान नाम था आचार्य चतुरसेन शास्त्री का। 26 अगस्त सन् 1891 ई. में उत्तर प्रदेश के बुलन्द शहर में 'चांदौख' नामक गांव में जन्में इस महान साहित्यकार ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात, संस्कृत कालेज से आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री और आचार्य इत्यादि परीक्षाओं को अपनी प्रतिभा के बल पर उच्चतम अंकों से उत्तीर्ण किया। इस संघर्षशील जीवन के झंझावातों के थपेड़ों को किसी प्रकार से झेलता हुआ, बर्दाश्त करता हुआ यह छात्र डी.ए.वी. (D.A.V.) लाहौर के आयुर्वेद विभाग में एक प्रोफेसर के पद को सुशोभित किया। आचार्य जी का व्यक्तित्व महान था। पिता केवलराम ठाकुर तथा माता नन्हीं देवी दोनों का ही परम लाडला, दुलारा, आँखों का तारा यह लाल किस दिन साहित्य के पटल पर अमर हो गया, यह किसी को भी पता न चला। धीरे-धीरे अपने कार्यों और जीवन के झंझावातों के बीच सामंजस्य बैठाता हुआ यह छात्र अपने सपने को पूरा करने के लिए रात-दिन लगा रहा। अपने जीवन का हर कतरा, साहित्य के प्रति न्योछावर करने के लिये हर क्षण तैयार रहता था। इतना भावुक, इतना संघर्षशील, स्वाभिमानी एवं सेवाभावी व्यक्तित्व था कि उन्होंने अपने जीवन की गाढ़ी कमाई से बनवाया हुआ दिल्ली के शहादरा में स्थित घर को, जिसे वे अपनी जान की तरह प्यार करते थे, 'दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी' को दान में दे दिया। इनके जैसा दानी आज के युग में मिलना बहुत मुश्किल है। घर की जिम्मेदारी एवं तीन भाइयों और दो बहनों के सारे खर्च को यही पूर्ण करते थे। सबसे पहला उपन्यास उन्होंने 'हृदय की परख' नाम से लिखा तथा सबसे पहली कहानी 'सच्चा गहना' के नाम से लिखी। सत्याग्रह और गाँधी पर

आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता संग्राम को अपनी अद्भुत दृष्टि के माध्यम से साहित्य के फलक पर प्रस्तुत किया।

प्रथम अध्याय-

'**आचार्य चतुरसेन शास्त्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व**' के अन्तर्गत मैंने सबसे पहले आचार्य जी के जन्म के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन किया है। आचार्य जी का जन्म कब हुआ? कहाँ हुआ? किस वातावरण में हुआ? आदि सभी परिस्थितियों का विशद विवेचन करने का प्रयास किया है। आचार्य जी का व्यक्तित्व लोगों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। वास्तव में आचार्य जी जिस सम्मान को पाना चाहते थे, वह उन्हें कभी मिला ही नहीं। उनके अपने इष्ट मित्र, साथी एवं साहित्यकार ही उन्हें सम्मान से वंचित रखना चाहते थे, जिसका वर्णन वे अपनी कहानी संग्रह में स्वयं करते हैं। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एक भी मित्र नहीं बनाया था। अपने आपको वे एक अपराजित योद्धा ही समझते रहे। शास्त्री जी एक आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे। वे एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें पाप, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, शोषण, उत्पीड़न, अमानवीयता एवं बैर इत्यादि बुराइयां न हों। वे युद्ध के प्रबल विरोधी थे। वे चाहते थे कि युद्ध कभी ना हो, क्योंकि युद्ध मानव की प्रकृति नहीं अपितु पशु की प्रकृति है। विवेकहीन होते ही वह हिंसक हो जाता है। आचार्य जी अपनी रचनाओं में सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, ऐतिहासिक इत्यादि विषयों से सम्बंधित सभी बातों का यथा स्थान उल्लेख करते हैं। शास्त्री जी एक मानवतावादी लेखक थे, जिसके कारण उन्होंने जिन पात्रों को अपने साहित्य में स्थान दिया है उनमें चोर, डाकू, व्यभिचारी,

मूर्ख, गिरहट, हत्यारे, नृशंस, हृदयहीन, क्रोधी आदि पात्र सम्मिलित हैं। इसी अध्याय में मैंने आचार्य जी का हिन्दी साहित्य में क्या स्थान है? इसका भी वर्णन अत्यंत प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करने का प्रयास किया है। जिस प्रकार से मुंशी प्रेमचन्द, निर्मल वर्मा, वृन्दावन लाल वर्मा, इलाचन्द जोशी, जैनेंद्र इत्यादि कहानीकारों ने कहानी के क्षेत्र में अपना तन-मन एवं अपना जीवन समर्पित करते हुए हिंदी कहानी को बुलंदियों पर पहुँचाने में अपना अमूल्य योगदान दिया, उसी प्रकार से आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने भी अपना सम्पूर्ण जीवन लेखन कार्य में ही गुजार दिया। शास्त्री जी ने अपनी लेखनी के बल पर हिन्दी साहित्य के प्रति एक ऐसे विशाल बगीचे को तैयार किया, जिससे आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी उस बगीचे के फल को ग्रहण करते रहेगी। आचार्य जी अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे, जिन्होंने अपने रचना संसार को इतना विस्तृत बनाया। वे अपने जीवन की अन्तिम यात्रा करने से पूर्व तक बराबर लेखन कार्य करते रहे।

द्वितीय अध्याय :

'**आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन**' में मैंने संस्कृति, संस्कृति का अर्थ, संस्कृति की परिभाषा एवं क्षेत्र आदि के विषय में वर्णन किया है। संस्कृति के प्रमुख घटकों जैसे- सत्य, अहिंसा, आत्मविश्वास, मूर्तिपूजा, संस्कार, धर्म, रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ आदि पर भी भरपूर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। संस्कृति एवं समाज एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों का अपना विशेष महत्व है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मनुष्य की साधनाओं की सबसे उत्तम परिणति संस्कृति है। संस्कृति समाज को संस्कारित करती है। प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक, अर्ध ऐतिहासिक, कल्पित तथा बाल कहानियों के

माध्यम से आचार्य जी ने मनुष्य को बेहतर तरीके से जीवन यापन करने का उपदेश दिया है। 'रूठी रानी' एक अत्यंत रोचक एवं प्रसिद्ध कहानी है, जिसमें जैसलमेर के रावल लुनकरण की पुत्री उमा के अप्रतिम सौन्दर्य और गुणों को दिखाने का प्रयास किया गया है। 'जैसलमेर की राजकुमारी' कहानी में जैसलमेर के राजा महाराव रत्नसिंह की पुत्री 'राजकुमारी' की परम वीरता का वर्णन किया गया है।

तृतीय अध्याय-

'**आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों की प्रांसगिकता**' के अंतर्गत मैंने उनकी कहानियों में सांस्कृतिक पुनरुत्थान, नैतिक मूल्यों, आदर्शवाद, अवसरवादिता, दुरूह सामाजिक व्यवस्था एवं सूक्ष्म संवेदनाओं का विस्तृत अध्ययन किया है। संस्कृति मनुष्य के अन्तरंग को संस्कारित करती है या विकसित करती है तथा सभ्यता मनुष्य के बहिरंग के सम्मिलित स्वरूप द्वारा प्रगतिशील जीवन का पूर्णतः एवं स्वस्थ स्वरूप बनाता है। आचार्य जी की कहानियों में पुनरुत्थान पर विशेष बल दिया गया है। नैतिक मूल्य एवं मानवीय मूल्य हमें एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा, अच्छे आचरण तथा सामाजिक जीवन जीने के तौर- तरीके समझाते हैं, जिससे हमें देश में एक महान नागरिक बनने की भी प्रेरणा मिलती है। किसी के प्रति विशेष सहानुभूति में जब कोई व्यक्ति किसी के दुःख में दुःखी होता है तो उसे उस व्यक्ति के प्रति संवेदना कहा जाता है। 'बुलबुल' नामक कहानी में बुलबुल की राजा के प्रति प्रकट की गई संवदेना को आचार्य जी ने बेहतर तरीके से दिखाने का प्रयास किया है।

'विश्वास पर विश्वास' कहानी सच्चाई, ईमानदारी, परहित हेतु समर्पण की भावना इत्यादि जैसे गुणों से युक्त है। रामसिंह एक पुलिस अफसर होते हुए भी

सच्चाई की डगर पर आजीवन चलता है। लालच, ईर्ष्या, द्वेष, चोरी आदि से वह कोसों दूर रहता है। रामसिंह की ईमानदारी की परख तब पूर्ण रूप से हो जाती है, जब वह चोर नन्दू की पत्नी के प्रति अपनी संवेदना को रोक नहीं पाता है। चोरी का पूरा माल बरामद हो जाने के पश्चात भी वह मैना के दुःख को देखकर,उसे पुनः वापस कर देता है। परिणाम स्वरूप वह अपनी होने वाली तरक्की के अवसर खो देता है।

चतुर्थ अध्याय :

'**आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के पुरुष पात्र**' के अन्तर्गत मैंने शास्त्री जी की कहानियों में उपस्थित हर वर्ग के पुरुष पात्रों को अपने अध्ययन का विषय बनाया है। उनकी कहानियों में मानव समाज की सुंदर झांकी प्रस्तुत हुई है। कहानियों के पुरुष पात्रों में सजीवता, स्वाभाविकता, आत्मसमर्पण की भावना, सहयोग की प्रबल इच्छा, एक दूसरे के दुःख में दुःखी तथा सुख में सुखी, अपने देश व राष्ट्र के लिए किसी भी हद तक गुजर जाने का अद्‌भुत साहस दिखाई पड़ता है। जैसे–'रघुपति सिंह' कहानी में पुरुष पात्र सरदार रघुपति सिंह की ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, अदम्य साहस, धार्मिकता और परोपकार की भावना जैसे सांस्कृतिक तत्वों को आचार्य जी ने बखूबी प्रस्तुत किया है। रघुपति सिंह एक ऐसा वीर सरदार था, जो अपने प्राणों की तनिक भी चिंता किये बगैर मुगल सेना से लोहा लेने हेतु प्रस्तुत हो जाता है। 'संतोषी भोला' नामक कहानी के पुरुष पात्र भोला के संतोष, स्वामिभक्ति तथा उसके स्वच्छ अंतर्मन का सुन्दर वर्णन मिलता है। 'सोने की पत्नी' कहानी में पुरुष पात्र रघुनाथ की धन लोलुपता, स्वार्थीपन व निर्दयता का उल्लेख मिलता है। रघुनाथ एक ऐसा स्वार्थी व्यक्ति है, जो धन और स्वर्ण की अभिलाषा में अपनी

पत्नी और पुत्र की जान तक लेने पर आमादा हो जाता है। 'विश्वास पर विश्वास' कहानी में एक ऐसे अधेड़ पुरुष नन्दू का चरित्र-चित्रण मिलता है, जिसने अपने से आधी उम्र की लड़की मैना के साथ सात फेरे लेकर, अग्नि को साक्षी मानकर शादी की है। गांव से अत्यंत दूर पत्नी के साथ जंगल में वह एक झोपड़ी बनाकर रहता है। उसका मुख्य व्यवसाय चोरी, डकैती, छीना-झपटी करना इत्यादि है। आए दिन वह शराब पीकर अपनी पत्नी को मारता-पीटता है तथा उसे विभिन्न प्रकार की यातनाएं भी देता है। 'ग्यारहवीं मई' कहानी में अन्तिम मुगल शासक बहादुर शाह और अंग्रेजों के मध्य हुई भयंकर क्रान्ति का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। कहानियों के पुरुष पात्रों के दृश्यों, घटनाओं, वस्तुओं के परिवर्तित होने के साथ-साथ पात्रों में भी एक प्रकार से नव-जीवन का संचार हो उठता है। ये पात्र किसी के सहारे खड़े न होकर बल्कि स्वावलम्बी बनते दिखाई पड़ते हैं। ये पात्र अपने स्वाभिमान और मर्यादा की पूर्ण सुरक्षा हेतु अपने प्राणों की बाजी लगाने में जरा सा भी विलंब नहीं करते हैं।

पंचम अध्याय :

'आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के स्त्री पात्र' इसके अन्तर्गत मैंने उनकी कहानियों में वर्णित स्त्री पात्रों का चरित्रांकन किया है। शास्त्री जी की कहानियों में स्त्री पात्रों की अत्यंत भरमार है। इनकी कई कहानियां तो ऐसी हैं, जिनका नामकरण स्त्री पात्रों के नाम पर ही किया गया है। जैसे- 'लालारुख', 'अम्बपालिका', 'नूरजहाँ का कौशल', 'ताज' आदि। आज की स्त्रियाँ पुरुषों से किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं, अपितु वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हुई नजर आती हैं। चाहे युद्ध का मैदान हो, हवाई जहाज की सेवा हो, सेना हो, राजनीतिक क्षेत्र हो, धार्मिक क्षेत्र हो, मनोवैज्ञानिक अथवा

किसी भी प्रकार का सामाजिक कार्य क्षेत्र हो,सभी क्षेत्रों में स्त्रियाँ आज भी पुरुषों से कम स्थान नहीं रखती हैं। ऐसे ही हर तरह की स्त्री पात्रों का वर्णन आचार्य जी ने अपनी कहानियों में किया है। इसी बात को आचार्य जी ने ऐतिहासिक स्त्री पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करके यह बताने का प्रयास किया है कि हमारे देश की नारियां प्रत्येक युग में अग्रणी रही हैं। जैसे- 'जैसलमेर की राजकुमारी' कहानी में रत्नवती के अदम्य साहस और पराक्रम का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। रत्नवती की वीरता, दृढ़ प्रतिज्ञा, उसके असाधारण शौर्य को दिखाकर आचार्य जी आज की नारियों में उसी पराक्रम और वीरता का संचार करना चाहते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ी में किसी भी स्त्री या लड़की को अपनी आत्मरक्षा के लिये,किसी और पर निर्भर न होना पड़े। इनकी कहानियों को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि मानों ये पात्र बोल उठेंगे।। कहानियों में इतनी सहजता एवं उचित वातावरण का निर्माण किया गया है जिसे देखकर सहज ही लगता है कि वे मात्र एक पात्र न होकर बल्कि असली पात्र के रूप में हमारी आँखों के पटल पर मूर्तिमान हो जाते हैं। 'रूठी रानी' की उमा देवी अपने पति से रूठकर 28 वर्ष की लम्बी अवधि तक उनसे अलगाव रखते हुए अंत में उनकी मृत्यु के पश्चात उनके साथ सती हो जाने के लिये पूर्ण रूप से अपने आपको समर्पित कर देती है।

'मास्टर साहब' कहानी की नायिका भामा अपने नारीत्व को खोने के पश्चात ही नारी जीवन के तथ्य को समझ पाती है कि वह (नारी) घर की साम्राज्ञी है तथा उसे बड़ी ही सतर्कता के साथ अपने घर को हर तरफ से बन्द करके, अपने साम्राज्य का स्वच्छन्द उपभोग करना चाहिए। 'अम्बपालिका' कहानी में अम्बपालिका के माध्यम से बौद्ध कालीन सामाजिक परिवेश, संस्कृति, रीति-रिवाज, परम्पराएं, धर्म कलाएं आदि का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है।

यह कहानी उस समय की परम्परा को दर्शाती है, जब वैशाली गणतन्त्र में यह नियम था कि राज्य की जो कन्या सबसे सुन्दर एवं आकर्षक होती थी, उसे मनोरंजन हेतु नगरवधू (वेश्या) के रूप में राजमहल में सुरक्षित रखा जाता था। 'सोया हुआ शहर' में साम्राज्ञी नूरजहाँ की स्वार्थपूर्ण कूटनीति, उसकी वीरता, उसके अदम्य साहस का परिचय मिलता है। 'विश्वास पर विश्वास' कहानी में मैना की धीरता, सहनशीलता तथा पतिव्रता का पूर्ण रूपेण वर्णन है। मैना जो कि अभी मात्र 25 वर्ष की सुन्दर नारी थी, वहीं उसका पति 50 वर्ष का अधेड़ था और वह चोरी, डकैती, छिनैती, शराब-कबाब, गुंडेबाजी इत्यादि कर्मों में लिप्त रहता था, परन्तु उसकी पत्नी मैना उसको अपना पति परमेश्वर ही समझती। लाख यातनाएं मिलने के बावजूद भी मैना उफ तक नहीं करती है, क्योंकि उसे यह मालूम था कि हिन्दू धर्म में यदि किसी लड़की की शादी एक बार हो जाती है तो वह आजीवन धर्म की बेड़ियों, परम्पराओं और रीति-रिवाजों में बंध जाती है। इन्हीं परम्पराओं और संस्कृतियों की रक्षा करते हुए मैना अपने हर दुख को किस्मत का लेख समझकर सहर्ष स्वीकार कर लेती है।

षष्ठ अध्याय :

'आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का शिल्प सौष्ठव' -

किसी भी साहित्य में यदि शिल्प सौष्ठव न हो तो उस साहित्य पर लोगों का बहुत कम प्रभाव पड़ता है। इसलिए साहित्य में शिल्प का होना नितांत आवश्यक है, क्योंकि साहित्य में शिल्प ही वह माध्यम होता है, जिसके सहयोग से एक रचनाकार अपने आन्तरिक विचारों, मनोभावों, अहसासों, हृदय की संवेदनाओं एवं प्रभावों आदि को स्पष्ट, तर्क सम्मत, सुव्यवस्थित तथा अत्यधिक सौन्दर्यशाली

रूप में व्यक्त करने में सक्षम होता है। शिल्प की यदि बात करें तो इसके अन्तर्गत कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद कौशल, लोकोक्तियाँ, कहावतें एवं मुहावरे, देशकाल और वातावरण, भाषा-शैली, उद्देश्य आदि तत्वों की प्रधानता होती है। इस अध्याय के अंतर्गत हमने शिल्प के शाब्दिक अर्थ, शिल्प पर आधारित अनेक साहित्यकारों की परिभाषाएं, शिल्प का अभिप्राय लिया है।

भाषा-

भाषा के अन्तर्गत इनकी कहानियों में प्रयुक्त तद्भव, तत्सम, अंग्रेजी, उर्दू , देशज, अरबी, इत्यादि भाषाओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। जैसे-

हिंदी भाषा के अन्तर्गत निम्नलिखित शब्द हैं -

तद्भव शब्द- आग, खेत, रात, सूरज

तत्सम शब्द- अग्नि, रात्रि, वसन

देशज शब्द- पगड़ी, गाड़ी, थैला, पेट इत्यादि

अंग्रेजी शब्द -ऑफिसर, कॉलेज , डॉक्टर , स्टेशन, पैन, साइकिल, सिगरेट आदि

उर्दू- खैरियत, जमानत,

अरबी- भाषा, सिपाही

संकर शब्द- रेलगाड़ी

इत्यादि प्रकार की भाषाओं एवं शब्दों का प्रयोग आचार्य जी की कहानियों में सर्वत्र दिखाई पड़ता है।

शैली-

मैंने आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी की कहानियों में प्रयुक्त कई प्रकार की शैलियों का वर्णन अपने प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में करने का प्रयास किया है। जैसे–

वर्णनात्मक शैली

संवादात्मक शैली

पत्र शैली

नाटक शैली

मनोविश्लेषणात्मक शैली

व्यंग्यात्मक शैली

शिल्प के द्वारा ही एक साहित्यकार अपनी रचनाओं को सरल, सरस, प्रभावोत्पादक, हृदयगामी एवं उच्चकोटि तक पहुँचाने में पूर्णतः सफलता हासिल करता है।

निष्कर्ष/सुझाव

इस प्रकार हम यह निःसंदेह कह सकते हैं कि आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी ने हिन्दी साहित्य के प्रति एक विशाल बगीचे को तैयार किया है, जिससे आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी उस बगीचे के फल को ग्रहण करती रहेगी। उन्होंने सभी प्रकार की कहानियाँ ऐतिहासिक, सामाजिक, मुगल–कालीन, राजपूती–जीवन, चिकित्सा–शास्त्र इत्यादि सभी विषयों पर स्वच्छंदता पूर्वक लेखनी चलाई तथा हिन्दी कहानी के इतिहास में उच्च शिखर को प्राप्त किया, इसमें कोई संदेह नहीं है। एक लेखक जिसने 450 कहानियों के अतिरिक्त अन्य कई पुस्तकें, वैवाहिक जीवन तथा पति–पत्नी के आदर्श जीवन से सम्बन्धित लिखीं हैं वह कोई साधारण पुरुष नहीं हो सकता। वे अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। जिन्होंने अपने

रचना संसार को इतना विस्तृत बनाया। शास्त्री जी अपने जीवन की अन्तिम अवस्था तक लेखन कार्य करते रहे। उन्होंने केवल कहानी ही नहीं अपितु लगभग सभी विधाओं में लेखन कार्य किया है। सन् 1961 ई. में आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी हिन्दी साहित्य की अनवरत सेवा करते हुए इस संसार से विदा हो गये। हिन्दी साहित्य जगत इसके लिये सदैव इनका ऋणी रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -:

आधार ग्रन्थ/ सहायक ग्रन्थ/ शोध ग्रन्थ/ पत्र एवं पत्रिकाएँ-

1.आधार ग्रन्थ -

उपन्यास

गोली,

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, गोली, 2020, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

सोमनाथ-

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोमनाथ, 2015, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

वयं रक्षामः-

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, वयं रक्षामः, 2020 नई दिल्ली, डायमंड बुक्स

देवांगना–

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, देवांगना, 2015, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

धर्मपुत्र–

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, धर्मपुत्र, 1996, दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

आलमगीर–

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, आलमगीर, 2019, संस्कृति और साहित्य

सोना और खून–

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, सोना और खून, 1985, नई दिल्ली, राजपाल एंड सन्स

कहानी संग्रह

दुखवा में कासे कहूँ–

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, दुखवा मैं कासे कहूं, 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

बाहर भीतर–

‘शास्त्री’, आचार्य चतुरसेन, बाहर–भीतर, 2006, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

सोया हुआ शहर–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, सोया हुआ शहर, 2009, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

धरती और आसमान–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, धरती और आसमान, 2008, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट बुक्स

कहानी ख़त्म हो गई–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, कहानी खत्म हो गई, 1961, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

मेरी प्रिय कहानियां–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, मेरी प्रिय कहानियां, 2017, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

दस बाल कहानियां–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, दस बाल कहानियाँ, 2016, नई दिल्ली, इण्डियन बुक बैंक

आचार्य चतुरसेन की श्रेष्ठ कहानियां–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, आचार्य चतुरसेन की श्रेष्ठ कहानियां, 2003, नई दिल्ली, हिन्द पॉकेट

बुक्स

बड़ी बेगम–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, बड़ी बेगम, 2016, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

आत्मकथा–

मेरी आत्मकहानी–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, मेरी आत्मकहानी, 1963, दिल्ली, साहित्य समिति

अन्य पुस्तकें–

भारतीय संस्कृति का इतिहास–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, भारतीय संस्कृति का इतिहास, 2017, दिल्ली, सर्वोदय साहित्य संस्थान

काम कला के भेद–

'शास्त्री', आचार्य चतुरसेन, काम कला के भेद, 2014, दिल्ली, राजपाल एंड सन्ज

2. सहायक ग्रन्थ

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, 2012, इलाहबाद, लोक भारती प्रकाशन
2. मुक्तिबोध, गजानन माधव, भारत इतिहास और संस्कृति, 2009, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
3. तातेड़, प्रो0 (डॉ.) सोहनराज, मध्यकालीन भारत का इतिहास भाग–2, 2014, जयपुर, पारीक बुक डिस्ट्रीब्यूटर्श

4. चक्रवर्ती, रणवीर, भारतीय इतिहास का आदिकाल, 2012, नई दिल्ली, ओरियंट ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड
5. शर्मा, रामशरण, भारत का प्राचीन इतिहास, 2018, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
6. चन्द्र, सतीश, मध्यकालीन भारत, 2008, हैदराबाद, ओरियंट ब्लैक स्वान
7. प्रेमचंद, 41 अनमोल कहानियां (आखिरी मंजिल) 2021, नोएडा, माप्ले प्रेस प्राइवेट लिमिटेड
8. प्रसाद, जयशंकर, जयशंकर प्रसाद की लोकप्रिय कहानियां (गुण्डा), 2021, नई दिल्ली, प्रभात पेपर बैक्स
9. वर्मा, वृंदावन लाल, वृन्दावन लाल की प्रमुख कहानियां (कलाकार का दण्ड), 2017, नई दिल्ली, प्रभात पेपर बैक्स
10. तिवारी, रामचंद्र, हिंदी का गद्य साहित्य, 2016, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

3. शोध ग्रन्थ

'यायावर', डॉ. रामसनेही लाल शर्मा, चतुरसेन के कथा साहित्य में समाज, धर्म और राजनीति, 2014, कानपुर, ज्ञानोदय प्रिंटर्स

4. पत्र - पत्रिकाएं

1. प्रताप- कानपुर (1913)
2. माधुरी- लखनऊ (1922)
3. चाँद- प्रयाग (1920)
4. सुधा- लखनऊ (1929)

5. कर्मवीर- जबलपुर (1924)
6. आजकल- दिल्ली
7. संचेतना- दिल्ली
8. कादम्बिनी- दिल्ली
9. दैनिक हिंदुस्तान- लखनऊ
10. अमर उजाला- इलाहाबाद
11. सम्मेलन पत्रिका- हिंदी साहित्य सम्मेलन
12. संपादक- वैरागी मोहन- अक्षरवार्ता (पत्रिका), अगस्त 2022, क्षीर सागर उज्जैन
13. मानस, डॉ. सुनील कुमार- आलोचन दृष्टि (पत्रिका), जनवरी-मार्च 2020, आजाद नगर, बिन्दकी कानपुर
14. मानस, डॉ. सुनील कुमार- अक्षरवार्ता (पत्रिका), अप्रैल-जून 2019, आजाद नगर, बिन्दकी कानपुर
15. संपादक- डॉ. मुकेश कुमार, हिंदी कविता राष्ट्रीय चेतना एवं संस्कृति (द्विवेदी युगीन काव्यधारा और राष्ट्रीय चेतना) 2018, दिल्ली, साहित्य संचय प्रकाशन पृष्ठ 140-146

संपादक -गवली ,डॉ .कल्पना ,हिंदी प्रवासी कथा साहित्य भाग) 2-बसंत से पतझड़ :बिखरती गृहस्थी ,(2018 ,कानपुर ,माया प्रकाशन पृष्ठ 210-207